ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय

पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)

फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27 अंकः 66 बुलेटिन अवधिः 22 – 26 अगस्त, 2018 दिनः मंगलवार दिनाँकः 21 अगस्त, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	22/08/2018	**23/08/2018**	**24/08/2018**	**25/08/2018**	**26/08/2018**
वर्षा (मिमी0)	10	20	35	20	30
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	34	33	32	32	31
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	26	25	24	24	25
बादल आच्छादन	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	90	95	95	95
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	50	50	55	55
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	006	004	004	006
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

आगामी पांच दिनो में हल्की से मध्यम वर्षा होने के साथ आसमान में घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (14 – 20 अगस्त, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में घने से पूर्णतः बादल छाये रहे। अधिकतम तापमान 28.3 से 35.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 25.0 से 27.2 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 78 से 97 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 64 से 78 प्रतिशत एवं हवा 0.2 से 2.9 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व–उत्तर–पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- ❖ मक्का की फसल मे पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मक्का में पर्णच्छद अंगमारी के नियंत्रण हेतु निचली पत्तियो को हटा दें तथा प्रोपीकोनाजोल 1 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ धान में, जीवाणुज पर्ण अंगमारी हेतु खेत मे खड़े पानी को निकाल दें तथा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 15 ग्राम तथा कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्राम के मिश्रण को 500 लीटर पानी मे घोल बनाकर /है0 की दर से छिड़काव करें।
- ❖ गन्ने मे अगोला बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्लोरान्ट्रोनिलिप्रोल 18.5 एस0 सी0 के 375 मिली दवा को 1000 लीटर पानी मे घोल कर छिड़काव करें।
- ❖ गन्ने मे काला बग का प्रकोप हो तो फेन्थेएट 50 ई0सी0 के 1 लीटर/है0 या क्यूनालफास 25 ई0सी0 के 2 लीटर को 500 लीटर पानी मे घोल कर छिड़काव करें।
- ❖ धान की पत्तियों पर हिस्पा कीट का भी प्रकोप दिखने पर, जहाँ कहीं इनका प्रकोप दिखाई दे वहाँ ट्राइएजोफॉस 40 ईसी, 750 मि0ली0 या मोनोक्रोटोफॉस 36 एसएल 1400 मि0ली0 प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- ❖ नत्रजन की आधी बची मात्रा का यूरिया के रुप में टाप ड्रेसिंग दो बार में कल्ला फूटते समय रोपाई के 20 दिन बाद तथा बाली बनने की प्रारम्भिक अवस्था यानि रोपाई के 40–50 दिन पर प्रयोग करें। नाइट्रोजन के टॉप ड्रेसिंग के समय खेत मे पर्याप्त नमी होना चाहिए तथा पत्तों पर वर्षा की बूंदे न हो।
- ❖ मक्का की फसल मे दो निराई गुड़ाई बुवाई के 20 तथा 35 दिन पर करें।
- ❖ धान मे खरपतवार नियंत्रण हेतु निराई दो बार– पहला रोपाई के 20 दिन तथा दूसरा 40 दिन पर अवश्य करें।
- ❖ धान मे खरपतवार नियंत्रण हेतु बिसपाइरीबैक सोडियम 10 ई0सी0 की 20–25 ग्राम मात्रा का छिड़काव रोपाई के 15–20 दिन के अंदर करना चाहिए।

उद्यान प्रबन्धः

- ❖ अगेती पालक के लिए खेत तैयार कर इस माह के अंत तक बुवाई करें।
- ❖ पालक के लिए उर्वरक, नत्रजन 50, फास्फोरस 50 व पोटाष 50 की दर से डाले।
- ❖ पालक की बुवाई 25–30 से0मी0 की दूरी पर कतारों में करें जिसमें बीज दर 25–30 कि0ग्रा0 बीज प्रति हैक्टेयर रखें।
- ❖ इस माह आम में जाला बनाने वाला टेन्ट कैटरपिलर कीट का भी प्रकोप होता है इसलिए जाला छुड़ाने वाले यंत्र से जाले को साफ करे। एवं प्रभावित प्ररोहो को काटकर कीड़ो सहित जला दे। अगर प्रकोप अधिक हो तो कीटनाशको जैसे 0.2 प्रतिशत कार्बरिल या 0.05 प्रतिशत क्वीनालफॉस का छिड़काव करे।
- ❖ रेडरस्ट तथा एन्थ्रेक्नोज के नियत्रंण हेतू 0.3 प्रतिशत कॉपर ऑक्सी क्लोराइड (3.0 ग्रा0 प्रति ली0) का छिड़काव करे।
- ❖ नये बाग लगाऐ।
- ❖ बागों से वर्षा का पानी निकालने के लिए उचित व्यवस्था करें।
- ❖ आम के फले हुए पेड़ो मे 50 ग्राम नाइट्रोजन प्रतिवर्ष प्रति पेड़ आयु के अनुसार दें। इस प्रकार अधिकतम 500 ग्राम नाइट्रोजन दस वर्ष या इसके पश्चात् अर्थात् 1.1 किग्रा यूरिया प्रति पेड़ के हिसाब से फल तोड़ने के पश्चात् देना आवश्यक होगा।
- ❖ टमाटर एवं मिर्च की फसल मे जड़ एवं तना संधि सड़न रोग के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडरमा 10 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिंचाई करें।
- ❖ कद्दु वर्गीय फसलों की पत्तियो पर पीले–भूरे धब्बे दिखाई पड़ने मेन्कोजेब 2.5 ग्रा0/ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

- मिर्च की फसल में ऊपर से डन्ठल काले पड़कर सूखने की समस्या की निदान हेतु संक्रमित शाखाओं को तोड़कर हटा दें एवं फल सड़न की समस्या हेतु कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- भिण्डी की पछेती फसल मे पत्तियो की शिराये पीली पड़ने पर संक्रमित पौधो को उखाड़ दे तथा रोगवाहक कीटो के नियंत्रण हेतु किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करे।
- टमाटर की फसल मे पत्तियो पर धब्बे पड़ने एवं झुलसने पर मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।

पशुपालन प्रबन्धः

- पशुओं को गलघोटू रोग से बचाने के लिए जानवरों को साफ–सुथरे स्थान पर बांधे तथा आस–पास बरसात का पानी इकट्ठा ना होने दें। गलघोटू रोग के लक्षण दिखने पर पीड़ित पशु की नस में सफोनामाइडस जैसे सल्फामेथाजाइन या सल्फरडाईमिडेन 150 मिग्रा/किग्रा के हिसाब से तीन दिन तक पशुचिकित्सक की सलाह से दें।
- पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
- पीने का पानी स्वच्छ होना चाहिए तथा गन्दे पानी में परजीवी जनित व फफूंदी जनित विषाणु की सम्भावना होती है।
- नमी की वजह से आहार में फफूंदी लग जाती है जिससे आहार में पोषक तत्व की कमी हो जाने से अपलाटॉक्सीकोशिश नामक बीमारी हो जाती है। इससे मुर्गियों के पेट में कीड़े पड़ने से अण्डा देने की क्षमता घट जाती है ऐसी मुर्गियों को पशु चिकित्सक की सलाह से कृमिनाशक दवा महीने में एक बार अवश्य दें।
- वर्षा ऋतु में आद्रता की वजह से मक्खी–मच्छरों की प्रजनन क्षमता बढ़ जाती है इससे मुर्गीघर को बचाने के लिए मेलाथियान या फिनिट का स्प्रे करें।
- पशुओं का आवास सूखा होना चाहिए इसके लिए समय–समय पर चूने का छिड़काव करें।
- पशु को ब्याने के बाद अच्छी तरह से साफ–सफाई करके निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह से यूटरोटोन/हरीरा/गाइनोटोन नामक दवा में से किसी एक दवा की 200 मिली मात्रा सुबह शाम तीन दिनों तक गर्भाशय की सफाई हेतु देनी चाहिए।
- प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।

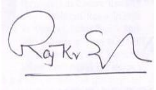

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर